Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IX, Issue No. XVII, Jan-2015, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

जैनेन्द्र जी की ब्रह्मचर्य सम्बंधी मौलिक विचारधारा

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IX, Issue No. XVII, January-2015, ISSN 2230-7540

जैनेन्द्र जी की ब्रह्मचर्य सम्बंधी मौलिक विचारधारा

Sunil Rani

Research Scholar, Monad University, UP

----------X----------

''पुरूष यदि एक ही स्त्री (पत्नी) में काम भाव दखे और धर्मानुकुल कामोपभोग करे तो गृहस्थ होने पर भी वह ब्रह्मचारी ही है। काम को व्यापक न होने देना। उसे एक ही पात्र में संकुचित कर दो। इस हेतू के लिए ही तो विवाह का आयोजन किया गया है। काम भाव को एक ही पात्र में निहित करके उसका नाश करो। निर्दोष तो केवल ईश्वर ही है। सम्भव है, गुरू में भी कुछ दोष हो। किन्तु गुरू के दोष का अनुसरण नहीं करना चाहिए। राम किसी स्त्री को और सीता किसी पुरूष को नहीं देखती थी। शास्त्र की यह मर्यादा है। ऐसी मर्यादा का पालन करने से ही जीवन सुधरेगा।'' ग्रहस्थ में रहकर मर्यादापूर्वक कम उपभोग के लिए जहां एक ओर वे मानव जो प्रेरित करते हैं, वहां दूसरी ओर वेद में वर्णित ब्रहमविषयक विचारधारा के भी पक्षधर है। वर्ण व्यवस्था की भांति आश्रम व्यवस्था भी भारतीय संस्कृति एवं हिन्दू धर्म का प्रमुख अंग है। ब्रह्मचर्य, ग्रहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास – इन चार आश्रमों में प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्यकर्म उसके वर्ण के साथ–2 आश्रम पर भी निर्भर करते हैं। प्रारम्भ पच्चीस वर्ष ब्रह्मचर्य आश्रम के अन्तर्गत माने गए हैं। प्राचीन काल में ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य बालक पांच से पच्चीस वर्ष की अवस्था तक गुरूग्रह में ब्रह्मचर्य का पालन करते थे। उस समय भूमिशयन, एक समय भिक्षात्र–भोज, गुरू की निष्कपट सेवा, वेद पाठ और अपरा विधा की प्राप्ति के साथ–2 ब्रह्मविद्या की प्राप्ति के लिए चेष्टा – ये आवश्यक कर्तव्य थे। शूद्र बाल भी अपने अधिकारानुसार इस उच्च आदर्श का अनुसरण करते थे। परनारी और परपुरूष का स्पर्श तक क्या उनके प्रति दृष्टिपात करना, यहां तक कि उनका चिंतन भी अपराध था। पच्चीस वर्ष की अवस्था प्राप्त होने पर समावर्तन संस्कार के बाद पाणिग्रहण संस्कार के द्वारा वे गृहस्थाश्रम में प्रवेश करते थे।

प्राचीन ऋषियों महऋषियों ने मानव जीवन की सार्थकता के लिए चार आश्रम निर्दिष्ट किए। जिनका विधिवत् पालन करते हुए प्राचीन लोग अपने जीवन को सफल बनाते सानन्दमय जीवन व्यतीत करते थे। उन आश्रमों में सर्व प्रथम आश्रम ब्रह्मचर्य था, जो जीवन के सुन्दर भवन में सुदृढ़ नींव का निर्माण करता था। अतः ब्रह्मचर्य आश्रम की महत्ता को सभी ने एक स्वर से स्वीकार किया। योगीराज स्वामी विवेकानन्द जी के जीवन का एक उदाहरण उल्लेखनीय है, जिसमें स्वामी जी द्वारा एक ही बैठक में एक पुस्तक के 400 पन्ने पढ़ने के उपरान्त एक प्रोफेसर द्वारा आश्चर्य प्रकट करने पर, कि तुमने इनको एक ही बार में कंठस्थ कैसे कर लिए, इस पर स्वामी जी ने हंसते हुए उतर दिया :– ''संयतमना योगी के लिए यह असम्भव नहीं है। मेरा विश्वास है, यह शक्ति सभी प्राप्त कर सकते हैं। आप जानते हैं, मै कामकांचनत्यागी सन्यासी हूं। आजन्म अखण्ड ब्रह्मचर्य के परिणाम में यह शक्ति स्वयं ही मुझमें आ गई है। पाश्चात्य देशों में अनेक लोग इस पर विश्वास नहीं कर सकते हैं, परन्तु भारत में ब्रह्मचर्य के बल पर इस प्रकार की स्मृतिशक्ति के अधिकारी आज कम होने पर भी अदृश्य नहीं हुए हैं।''1 जैनेन्द्र जी ब्रह्मचर्य विषयक विचार उनकी कहानियों पर कहीं तो मौलिक है : उदाहरणार्थ ''यह जो विराट ब्रह्माण्ड है इसकी व्यक्ति को सारस्य में ब्रहम कहिए। इसी व्यापक समग्र के प्रति जो प्रीति की चर्चा है वहीं बह्मचर्य है।'

जैनेन्द्र जी की यह परिभाषा बहुत सरल और सार्थक है। वेद में वर्णित ब्रहमचर्य का अर्थ भी यही है परन्तु ब्रहमचर्य के पालन का मार्ग जो उसमें बतलाया है वह बहुत ही कठिन साधना है, तपस्या है जिसमें बहुधा ऋषियों–महऋषियों की समाधि भंग हुई है। वह ब्रहमचग्र का मार्ग इन्द्रियनिग्रह का मार्ग है। जैनेनद्र जी इसे नकारते हुए कहते हैं –''रूढ़ ब्रहमचर्य उल्टे व्यक्तित्व को विभक्त और खण्डित कर आता है। दमित वासना निःशेष नहीं होती, बल्कि अवसर की ताक में रहती है। एक बिन्दू पर पहुंच कर वह तपस्या के अहं मद को अपने स्फोट से पैसा खण्ड–2 कर डालती है कि तपस्वी फिर टिक नहीं पाता, खील–2 हो जाता है।1 निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि अपनी इन्द्रियों व मन को विषयों से हटाकर ईश्वर और परोपकार में लगा कर केवल उपस्थ इन्द्रियों का संयम मात्र ही ब्रहमचर्य नहीं है। इन्द्रियों व न की शक्तियों का रूपान्तरण कर उनको अत्ममुखी धर ब्रहम की प्राप्ति करना ब्रहमचर्य है। भृतहरि के वैतग्य शतक का प्रस्तुत श्लोक हमारे विचार से ब्रहमचर्य की सम्यक परिभाषा है।

'भोगा न भुस्ता वयमेव भुक्तास्तपों न तप्तं वयमेय तप्ताः।

कालों न भातो वयेव याताः तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः ।।

अर्थात भोग को हम नहीं भोगते, भोग ही हमें भोग लेते हैं। तप नहीं तपा जाता, हम स्वयं तप जाते हैं। काल का अन्त नहीं होता। हम ही काल में समा जाते हैं। तृष्णाएं जीर्ण नहीं होती, हम स्वयं जीण हो जाते हैं। भोग भोगने से तृप्ति कदापि नहीं होती, अपितु इच्छाएं बलवती होती चली जाती हैं।

प्राचीन ऋषियों–मुनियों ने इस विषय पर गहन विचार किया कि वास्तविक सुख क्या है तथा इस सुख की प्राप्ति कैसे की जा सकती है ? अन्त में वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि ब्रहम की प्राप्ति ही वास्तविक सुख है। अन्य सभी सुख क्षणिक और दुष्जन्य है। इसलिए मुनियों ने चार आश्रमों का विधान किया। और उनमें ऐसा क्रम रखा जिससे संसार क्षेत्र में किसी भी प्रकार की बाधा न हो और मनुष्य उन चार आश्रमों का विधिवत् पालन कर मोक्ष प्राप्ति कर सकें। उन चार आश्रमों में से प्रथम आश्रम है – 'ब्रहचर्य आश्रम'। इस आश्रम में शिष्य 25 वर्ष तक गुरू

www.ignited.in

के समीप रह कर विद्या का अध्ययन करता था। वह विद्या भी ब्रहम विधा हुआ करती थी। अतः संक्षेप मे कहा जा सकता है कि ब्रहमचर्य एक आश्रम था।

शारीरिक सौन्दर्य के आकर्षण का, रूप और लावण्य का, कोमलता और कामुकता का दास न बनना ही ब्रहमचर्य का पालन करना है। यौवन में भी एक शिशु के समान मन के निर्दोष रहने और दृष्टि और वृति के शुद्ध रहने को ही ब्रहमचर्य कहा जाता है। गृहस्थ को जो आश्रम समान बनाकर इस अपवित्र संसार रूपी कीचड़ में कमल के समान रहता है, वही ब्रहमचारी है, जो अपने तथा अन्य देह पर आकर्षित नहीं है, बल्कि स्वयं को देह से न्यारा आत्मा समझकर सारी चर्चा करता है, वही मानो ब्रहचर्य व्रत का पालन करता है। इस प्रकार से आचरण करते हुए ही अपनी शक्ति का संचय करता है और अपनी तथा अन्य प्राणियों को उन्नति में लगा रहता है। मन में निर्दोष होने के कारण उसकी मासुमियत दूसरों को प्रभावित करती है। रू लावण्य के आकर्षण को जीतने के परिणाम स्वरूप वह दूसरो को आकर्षित करता है। इन्द्रियों पर विजय पाने के स्वरूप कर्मेन्द्रियों उसकी दासी हो जाती हैं और उसे स्थाई स्वास्थ्य तथा सात्विक सुख की प्राप्ति हो जाती है। शक्ति का संगठन होने के कारण वह इतना शक्तिशाली हो जाता है कि मृत्यु को भी जीतकर अगर देवता बन जाता है। युवावस्था में भी मासुम शिशु की तरह स्थिति बनाए रखने से उस का शैशव और यौवन चिरस्थाई रहता है और उसे बुढ़ापा और व्यक्ति अपने अधीन नही कर सकते।

ब्रहमचर्य का पालन सभी पापों को नष्ट करता है। इंसान के पास बुद्धि है और जरा समझ की बात है कि बच्चों को पढ़ते समय ये ब्रहमचर्य का पालन करने को कहा जाता है क्योंकि एकाग्रता को बढ़ाने के लिए ब्रहमचर्य का पालन जरूरी है और इसी समय को जीवन का सबसे बढ़िया समय माना जाता है। ऋषि मुनियों की श्रृंखला में देखे तो पला चलता है कि पहले आश्रम को ही घर की तरह रखा जाता था या यूं कहें घर को आश्रम बना कर रहते थे। उनके साथ–2 सारा समाज भी सुखी रहता था। ब्रहमचर्य का पालन करने वालों के चरणों में दुनिया झुकती है। कन्या को ही देखें जब तक कौमार्य का पालन करती है तब तक कन्या माता कह गृहस्थी उससे चरण छूते हैं। और ब्रहमचर्य भंग होते ही उसे दूसरों के चरणों में झुकना पड़ता है। लड़की और लड़के का जब तक आत्मिक सम्बंध रहता है वो एक दूसरे के लिए मर मिटने को तैयार रहते हैं और जब वे पति पत्नी बन काम विचार में जाते हैं तो गृह क्लेश का माहौल शुरू हो जाता है। इससे सिद्ध होता है कि ब्रह्मचर्य में शक्ति है और शक्ति का ह्रास होने के कारण सारी समस्याएं जागृत होने लगती है। ब्रहमचर्य के अन्य अनेक फायदे हैं। इससे जो शक्ति संचित होती है वह हमें परमात्मा के नजदीक लेकर जाती है। आत्मा परमात्मा के ज्ञान के कारण हम अनेक प्रकार की रिद्धि–सिद्धि के मालिक बन स्वयं समाज के लिए सरल कार्य कर सकते हैं।

विवाह पश्चात टूटते बिखरते रिश्तों के मद्देनजर आज के युग में काउंसलर की आवश्यकता महसूस होती है, जो कि काफी हद तक ठीक भी है। स्थाई रिश्ते की शुरूआत भी स्थाई ढंग से हो। लेखिका रूबी मोहंती का इस संदर्भ में कथन सराहनीय है।''विवाह सिर्फ दो लोगों के जीवन को ही आपस में नहीं जोड़ता, बल्कि 2 परिवार, 2 समाज और 2 विभिन्न परम्पराओं को जोड़ता है। वेडिंग कोंचिग में सिर्फ होने वाले दुल्हा, दुल्हन की काउंसलिंग ही नहीं, माता पिता व सास ससुर की भी काउंसलिंग होती है। जिससे सामान्य मन मुटाव की सुलझाने होती है। जिससे सामान्य मन मुटाव को सुलझाने में मदद मिल सके। विवाह से पहले जब जब लोग एक दूसरे के बारे में काफी कुछ जान समझ लेते हैं, तो सकारात्मक ऊर्जा के साथ मजबूत रिश्ते की शुरूआत होती है। आगे चलकर रिश्ते में किसी तरह की कड़वाहट पैदा हो और एक दूसरे के बारे में नकारात्मक सोच मन में पनपे और तानेभरी बातें जुबान से निकलें, इससे बेहतर है कि पहले अनुमान लगा लिया जाए कि आप भावी जीवनसाथी के साथ खुश रह पाएगी या नहीं।''

जड़–चेततेतन ''सूक्ष्म और स्थूल रूप में प्रकट होने से पहले यह जड़ चेतन सम्पूर्ण जगत अव्यक्तरूप में ही था। इस अव्यक्तावस्था से ही यह नामरूपमय प्रत्यक्ष जड़–चेतनात्मक जगत उत्पन्न हुआ है। परमात्मा ने अपने को स्वयं ही इस जड़ चेतनात्मक जगत् के रूप में बनाया है। भगवान के नाम, रूप, लीला और धाम सब कुछ अप्राकृत है। चिन्मय है। उनके जन्म और कर्म दिव्य हैं। भगवान को प्राक्टय का रहस्य बड़े–2 देवता और महर्षिलोग भी नहीं जानते। जब तक इन परम प्राप्त आनन्दस्वरूप परमेश्वर से जीवात्मा का संयोज नहीं हो जाता तब तक इसे किसी भी स्थिति में पूर्णानन्द, नित्यानन्द, अखण्डानन्द और अनन्तानन्द नहीं मिल सकता।

पत्र–पत्रिकाएं

1. ओम शान्ति मीडिया, सितम्बर 2013, अंक–11।
2. पथिक संदेश पत्रिका, जून 2011।
3. दैनिक भास्कर – रोहतक, पृ. 02 (आशो) 20 अक्तूबर 2013।
4. ओशो वर्ल्ड मासिक पत्रिका, नवम्बर 2013।
5. अखण्ड ज्योति, मासिक पत्रिका, अगस्त 1965।
6. संस्कारम् पत्रिका, मार्च 2013।
7. कल्याण पत्रिका, जीवनचर्या अंक जून 2012।
8. संगम पत्रिका, अप्रैल 2013।
9. योग संदेश पत्रिका अक्तूबर 2007।
10. संस्कारम पत्रिका, अक्तूबर 2013।